SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

रांगेय राघव के उपन्यासों में वर्णित नारी का जीवन संघर्ष 'कब तक पुकारू' उपन्यास के विशेष संदर्भ में

सविता सिंह, पी–एचडी, हिंदी विभाग
पं. हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
पुरूषोत्तम कुमार सिंह, शोधार्थी, हिंदी विभाग
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी), महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
सविता सिंह, पी–एचडी
पुरूषोत्तम कुमार सिंह, शोधार्थी
E-mail : savitasingh051978@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/11/2025
Revised on : 09/01/2026
Accepted on : 18/01/2026
Overall Similarity : 00% on 10/01/2026

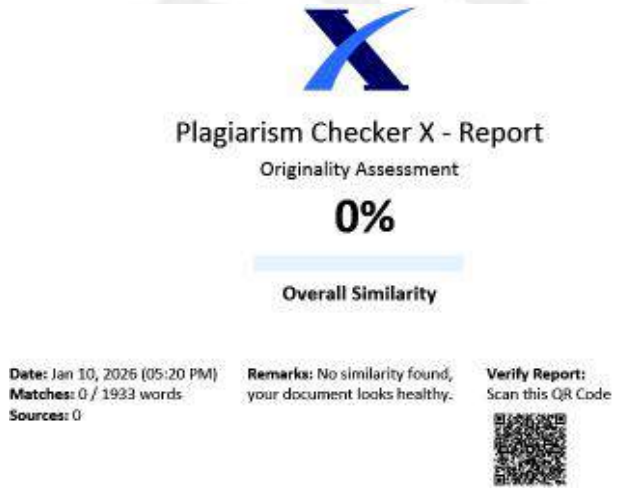

शोध सार

'कब तक पुकारूं' रांगेय राघव का एक प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास है जिसमें उन्होनें नट जाति विशेषकर करनट समुदाय की गरीबी, सामाजिक स्थिती, अंधविश्वास, आर्थिक विपन्नता तथा दैहिक शोषण का मार्मिक चित्रण किया है। इस उपन्यास में प्यारी, चंदा तथा कजरी प्रमुख नारी पात्र है जो समाज के द्वारा शोषित है। इस शोध पत्र के द्वारा उपन्यास मे निहीत नारी पात्रों की दुर्दशा तथा उनके जीवन को पाठकों के समक्ष लाने का प्रयास किया जायेगा।

मुख्य शब्द

करनट, सुखराम, प्यारी, कजरी, शोषण, समाज.

अप्रतिम प्रतिभा के धनी रांगेय राघव हिन्दी के महान् साहित्यकार थे। उन्होनें कहानी, उपन्यास, आलोचना व नाटकों के जरिए अपना अनुभव व विचार लोगों के समक्ष रखा है। उन्होनें 50 से अधिक उपन्यासों का सृजन किया है जिनमें 'कब तक पुकारूं', 'मुर्दों का टीला', 'सीधा–सादा रास्ता','लोई का ताना' तथा 'देवकी का बेटा' प्रमुख उपन्यास है। 'देवदासी', 'साम्राज्य का वैभव', 'अधूरी मूरत' तथा 'पाँच गधे' उनकी प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। उन्होनें समाज में व्याप्त रूढ़ियों व धार्मिक आंडम्बरों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है साथ ही उन्होनें वेश्यावृत्ति जैसे सामाजिक कुरूतियों के खिलाफ अपना लेखनकर्म किया है। 'कब तक पुकारूं' रांगेय राघव का एक आंचलिक उपन्यास है। उन्होनें इस उपन्यास में राजस्थान के नट जाति के करनट समुदाय की गरीबी, अंधविश्वास, शोषण तथा वैश्यावृत्ति का मार्मिक चित्रण किया है। करनट राजस्थान की एक ऐसी जाति

है जो मुख्य धारा से अलग अपना जीवनयापन करती हैं। इनके समाज में वैश्यावृत्ति को घृणित कार्य नहीं समझा जाता है। स्त्री स्वयं को दूसरों के समक्ष परोसने में शर्म नहीं करती। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र सुखराम है जो इस उपन्यास का नायक भी है। इस उपन्यास की पूरी कहानी सुखराम और उसकी पत्नी प्यारी के आस–पास घुमती है। अन्य सशक्त नारी पात्र कजरी और चंदा है। ये सभी पात्र शोषित है। इस उपन्यास में वर्णित अधुरा किला मानव की अधूरी इच्छा को दर्शाता है जो कभी पूरा नहीं हो पाता। इस अधूरी इच्छा के कारण वह पूरा जीवन दुःख पाता है।

इस उपन्यास में सुखराम अपनी कहानी बताता हैं। सुखराम की माँ बेला अपनी ममता से बेबस है। सुखराम का बाप उसे ठाकुर की संतान कहता है परन्तु बेला उसे एक नटी की संतान कहती है। इसी बहस में उनका बेटा सुखराम भी अपने आप को ठाकुर का बेटा कहता है। उसकी माँ बेला यह तिरस्कार सहन नहीं कर पाती और आहत होकर बेला जंगल की ओर भाग जाती है। उसके पीछे–पीछे सुखराम का पिता भी बेला को बचाने जंगल की ओर भागता है परन्तु जंगल में दोनों की मृत्यु हो जाती है। प्यारी सुखराम को चाहती है और वह नटी है। वह अपने नटी स्वभाव के कारण दूसरे मर्द के पास जाने से नहीं हिचकती। दरोगा जब उसे बुलाता है तो वह उसके पास रात बिताने के लिए चले जाती है। पुलिस करनटों को चोरी के अपराध में पकड़ती थी और छुटने के एवज में वे घर की स्त्रियों की मांग करते थे। मजबूरीवश घर की स्त्रियां अपने परिवारवालों को छुड़ाने के लिए अपनी देह को सौपते थे। यह उनकी विवशता है और ऐसा करने मे उसकी मजबूरी भी है जो हमें निम्न शब्दों में दिखता है, "तो वह कोड़े मार–मारकर तेरी और मेरे बाप की चमड़ी उधेड़ देगा।"[1] सुखराम अपनी पत्नी प्यारी को लोगों से बचाने की कोशिश करता है परन्तु प्यारी स्वयं ही शोषित होने को चली जाती है। वह कहती है, "इत्ती–सी बात के लिए मरना मुझे नहीं आता। औरत को तो औरत का ही काम करना पड़ता है।"[2] प्यारी वैश्यावृत्ति को औरत का काम मानकर इसमें शर्म नहीं करती। नटों का कोई स्थायी आवास नहीं होता है। ये अधिकतर खानाबदोश घुम्मक्कड़ होते है। इस समुदाय में एक से अधिक स्त्री रखना, पुरूषों व औरतों का शराब पीना, चोरी करना तथा धुम्रपान करना प्रमुख था। उनके आजीविका का साधन जड़ी–बूटी बेचना, शिकार करना, चोरी करना तथा रस्सियों पर खेल दिखाना साथ ही सामान्य बीमारियों का दवा–दारू करना प्रमुख काम है। इस उपन्यास में नटों के जीवन–संघर्ष के साथ नारी के संघर्ष को भी दर्शाया गया है। पहले दरोगा प्यारी का दैहिक शोषण करता है बाद में वह स्वयं रुस्तमखां के यहाँ चले जाती है। रूस्तमखां की वह रखैल बन कर उसके घर में रहती है। सुखराम अपनी पत्नी प्यारी को पुलिस व जमादार से बचाना चाहता है परन्तु वह इसमें असफल हो जाता है। प्यारी के अभाव में सुखराम कुर्री की पत्नी कजरी से प्यार करने लगता है। जब प्यारी को पता चलता है कि सुखराम कजरी पर मोहित है तो वह सुखराम से कहती है, "चुप रह, नही तो अच्छा नहीं होगा। मैं तेरे सारे नटों के डेरों में आग लगवा दूंगी। मैं तेरी कजरी को जूतों से पिटवाऊगी। मैं तुझे बाजार में घिसटवाऊगी।"[3] यह प्यारी का प्रेम है जो उसे सुखराम से अलग नहीं होने देता। वह स्वयं रूस्तम खां के घर में है फिर भी वह सुखराम से प्रेम करती है और उसके जीवन में कोई आये यह बर्दास्त नहीं कर सकती। प्यारी अपने प्यार का इजहार करते हुए सुखराम से कहती है, "पर तू नहीं मानता तेरे भले के लिए तुझसे दूर रहती थी। मैं तुझे ही नहीं तेरी इस सुन्दर देही को भी प्यार करती हूं। मेरा तो सब सत्यानास हो जाएगां पर मैं तुझे बिगड़ते नहीं देख सकती।"[4]

नट स्त्री पुरूषों के समान कितने भी पुरूषों के साथ संबंध बना सकती थी। सुखराम कजरी के साथ रहने लगता है तो प्यारी उसे उलाहना देती है जिसका जबाब सुखराम निम्न शब्दों में देता है, "वह रंडी है, तू कौन है? तू हजार मरद करती है, मैं दो लुगाई नहीं रख सकता।"[5] इस कथन से स्पष्ट है कि करनट समाज के लोग स्वछंद विचरण करते हैं। उन्हें बंधन पसंद नहीं है, परन्तु कजरी भी करनट है। वह अपने पति कुर्री के बाद सुखराम से स्नेह करने लगती है और बाद में वह किसी भी पराये मर्द की तरफ आँख उठाकर नहीं देखती। कजरी और प्यारी दोनों सुखराम से प्रेम करती है। प्यारी स्वयं को लुटाकर सुखराम से प्रेम करती है और सुखराम से कहती है, "नहीं, तू झूठ कहता है। मैंने एक किया, वह तू है। बाकी पैसे कमाने के लिए थे। उनको मैंने दिल नहीं दिया पर तूने कजरी को दिल दे दिया है। तन बंट सकता है मेरे राजा, मन नहीं बंट सकता।"[6] नटों की आर्थिक स्थिती बदतर होती है इसलिए नटों की स्त्रियां देह व्यापार कर अपना तथा अपने परिवार का पेट भरती है। कजरी सुखराम की पहली पत्नी

प्यारी से आशंकित रहती है कि वह कहीं सुखराम की अनुपस्थिती में मुझे पिटवा ना दे इसलिए कजरी सुखराम से कहती है, "रोज मुझसे तेरी गैरहाजिरी में लड़ेगी। मेरी गैरहाजिरी में तेरी भली बनकर तेरे कान भरेगी। तू कच्ची मत का आदमी, तेरी नाव आंधी और पानी दोनों के बारे कैसे सहेगी? थोड़े दिन में ही वह मुझे पिटवाने लगेगी।"[7]

करनट जनजाति में औरत को सदैव दबाकर रखा जाता है। स्त्री को पुरूष अपने पैरों के नीचे रखना चाहता है। स्त्री पर हाथ उठाना वह अपनी शान समझता है। स्त्री और पुरूष दोनों स्वछंद विचरण करते हैं उनमें किसी भी प्रकार का मर्यादा का बंधन नहीं है इसीलिए प्यारी अपने पति सुखराम को छोड़कर दरोगा के पास जाने में नहीं हिचकाती फिर बाद में वह रूस्तम खाँ के यहां रखैल बनकर रहती है। कजरी का पति कुर्री जब अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी को रख लेता है तो कजरी भी अपने पति को छोड़कर सुखराम के पास चली जाती है। कजरी सुखराम से कहती है कि मरद को हमेशा औरत को दबाकर रखना चाहिए। अगर उसे दबाकर नहीं रखा गया तो वह घर को बर्बाद कर देगी। कजरी औरत और आग दोनों को एक समझती है दोनों को अगर काबू में नहीं किया गया तो वह घर को नुकसान पहुँचा सकती है। वह कहती है, "मेरा बाप मेरी अम्मां से कहता था। मरद वही है जो औरत को दबा के रखता है। रोटी दे दो और बोटी दे दो। इनकी भूख मत रखो, पर फिर मीठे न बोलो, नही ंतो सिर पर चढ़ जाती है। औरत और आग बराबर है। सुलगते ही बुझा दो, नही ंतो ऊपर तक चाटती हुई, जलाती हुई चढ़ती चली जाएगी।"[8]

प्यारी अपनी इस हालत के लिए समाज को जिम्मेदार मानती है क्योंकि उनके समाज में औरत को मात्र भोग की वस्तु माना जाता है। प्यारी सुखराम से कहती है, "मेरा पाप क्या है? पराये मर्दो के संग सोई हूं तो तूने मेरी जात ऐसी बनाई क्यों जिसे कोई हक नहीं। तूने मुझे औरत बनाया क्यों?"[9] समय आने पर कजरी और प्यारी दोनों मिलकर रूस्तम खां की हत्या कर देते हैं और दोनों सुखराम के साथ रहने लगते हैं। बाद में बीमारी के कारण प्यारी की मृत्यु हो जाती है। जंगल में घुमते समय सुखराम और कजरी को अंग्रेज लड़की सूसन दिखती है जिसे उन्होनें डाकुओं से बचाया। इसके एवज में सूसन उन्हें अपने घर में काम पर रख लेती है। एक दिन अंग्रेज लॉरेंस सूसन का बलात्कार करता है। कजरी जब सूसन को बचाने जाती है तो लॉरेंस उसके पेट में लात मारता है जिससे उसका गर्भपात हो जाता है। कजरी की मृत्यु के बाद सुखराम सूसन की बेटी को अपनी बेटी मानकर अपने गांव ले जाता है। ठाकुर का बेटा नरेश सूसन की बेटी चंदा से प्रेम करता है। ठाकुर द्वारा सुखराम को परेशान किये जाने पर वह एक दिन चंदा की हत्या कर देता है। चंदा की मौत के बाद नरेश विक्षिप्त हो जाता है। सुखराम स्वयं को ठाकुर मानता था परन्तु वहीं वह उच्च वर्ग की हीनता से व्यथित हो जाता है जिसके कारण वह अपनी पुत्री चंदा की हत्या कर देता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जनजाति अधिकांशतया अपनी अज्ञानता व अशिक्षा के कारण शोषित होते हैं।

निष्कर्ष

रांगेय राघव एक सफल कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार होने के साथ–साथ एक सफल आलोचक भी थे। 'कब तक पुकारूं' उपन्यास में करनट जाति की उपेक्षा को लक्ष्य बनाया गया है जिन्हें सम्मान से जीने का हक नहीं है। स्त्रियों को शोषण का अधिकार मानकर उनका दैहिक शोषण किया जाता है। इस उपन्यास में करनटों के जीवन यापन, लोकजीवन, लोकगीतों, उनके अंधविश्वासों तथा महिलाओं का दैहिक शोषण का वर्णन किया गया है। इसमें जातिभेद की समस्या को प्रमुखता से उभारा गया है। इसमें चंदा और नरेश के असफल प्रेम कथा का वर्णन भी है। सामाजिक बंधनों के कारण समाज चंदा और नरेश के प्रेम को स्वीकार नहीं करता जिससे आहत होकर सुखराम चंदा की हत्या कर देता है और नरेश चंदा के अभाव मे पागल हो जाता है। इस उपन्यास में सामाजिक कुरीतियाँ, यौन संबंध तथा आर्थिक विषमता का भी यथावत् वर्णन मिलता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'कब तक पुकारूं' उपन्यास करनटों के वास्तविक जीवन संघर्ष के साथ नारी संघर्ष को भी दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 42।
2. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 42।
3. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 72।
4. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 73।
5. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 75।
6. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 75।
7. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 80।
8. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 94।
9. राघव, रांगेय (2023) *कब तक पुकारूं,* प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 125।

****